CC-0. In Public Domain. Digitized By Sarayu Foundation Trust and eGangotri

१०२५

८२०

वा. सं. ३१ ~~८४~~ ४५
ग्रं. सं. ~~८७१~~
२१३

श्रीसीताराम चरण चिन्ह
भाषा दोहा चौपाई

Courtesy: Prof. Arnab Bhattacharya IIT Kanpur

||१|| श्रीसीतारामोजयति||सोरठा||बंदौंगुरुपदधूरिपरमभूरिभवरुजहरन||सकलअमलआनिरूरिजेनलहैंर
हिंतेभाग्यहत||१||बंदोसोमुनिरायअंककंजजिनप्रगटकिय||गुरुसौरभसुचिपायसंतभृंगगहुलसतमन ||२||
बंदौसंतअनूपविनकारनजेपरमहित||जीवपरनभवकूपकरिकरुनाजेकरगहत||३||प्रनमोसंतसुजान
जेपरहितकहंअतिप्रबल||तिनकीकृपानिदानकरौंप्रबंधनबुद्धिबल||४||चौपाई||विनउंसंतच
रनकरजोरी||करहुविनीतविमलमतिमोरी||अलंकारकछुछंदनजानो||केवलसंतचरनबलमानो
||श्रीगुरुचरनकमलउरआनी||चरनचिह्नकछुकहौंवखानी||दोहा||एकसमयप्रभु[illegible]विधुभ सुखप
आसनआसीन||सिष्यतनीसनसुमतिअतिनाइदंडवतकीन||चौपाई||बोलेवचनजुगलक
रजोरी||अतिआरतहैमनिहिंनिहोरी||नाथप्रस्नकछुपूछनचहऊं||कहौजोप्रभुअनुसासनलह
हऊं||प्रभुपदकमलजिनहिंमनुनिगावहिं||उमासहितसंकरजेहिध्यावहिं||जिनहिंनापानितदिन
नुमध्यावतु||तिनकरआकृतिवरनतसनावतु||जाकरनमगनआहृतिवरना||उपमाजोजैसोजेहि ||१||

CC-0. In Public Domain. Digitized By Sarayu Foundation Trust and eGangotri
Courtesy: Prof. Arnab Bhattacharya IIT Kanpur

चरणा ॥ कृपासिंधु मन वक्र तनु भारी ॥ जेहि स्तुति भव संभव हुष जारी ॥ सुनत सुतीक्षन की प्रिय बानी ॥ विनय
विवेक भक्ति रस सानी ॥ तो सम संत न बोलत तेऊ निराई ॥ बरनि सुतीक्षन भाग बड़ाई ॥ सुमिरत चरन चिन्ह अनूपा ॥
बरन सहित मै कहौं अनूपा ॥ प्रथम हि कहौं बाम पद लक्षन ॥ धरत ध्यान तिय सदा विचक्षन ॥ आदि हिं म-
त्स्य चिन्ह प्रभु चरना ॥ मत्स्याकार संत सुभ बरना ॥ मत्स्य चिन्ह पद बेद प्रसंसा ॥ सगुन सकल जग जाके
अंसा ॥ मत्स्य उभय गुन सोभन करना ॥ दरिद्र दुष्ष अघ विघा हरना ॥ दूजे अमी कलस पद भ्राजा ॥ अ-
मी षानि तृ जग जग मृगराजा ॥ तीजे अर्ध चंद्र को अंका ॥ मानो दुति पाति थि को बंका ॥ जो इस्व अंक म-
मुके पद भ्राजै ॥ सो हिम दन रवि भाल विराजै ॥ याको ध्यान करत मन माहीं ॥ बंदनीय सो सब जग माहीं
चिन्ह चतुर्थ त्रिकोन कलावै ॥ त्रिगुन मयी जो सृष्टि बनावै ॥ ताको ध्यान करत पद त्र का ॥ जनम मरन तें
दो इ विमुक्ता ॥ पंचम अंब कला पद राजै ॥ अरुन कमल पराग जनु अलि भ्राजै ॥ स्याम बरन पत्र सा ह-
नि जोई ॥ सकल फल न कर कासु सोई ॥ फल जत न चरन हि संबस जिन के ॥ सकल मनोरथ पूरन ति-

CC-0. In Public Domain. Digitized By Sarayu Foundation Trust and eGangotri

॥२॥ नके ॥ छै धनुष कर चिन्ह बिराजे ॥ अरुन हरीत सुर पति धनु लाजे ॥ सकल धनुष कै आकार न ताना ॥ धउ
ष अंक सो इन्द्र जल जाता ॥ धनुष जन्त पद ध्यान जु साधै ॥ काम आदि बल ताहि न बाधै ॥ सम सम गोपद
अंक लसोई ॥ तासु अंस मै सुर भी होई ॥ गोपद जन प्रभु पद दरसिय जिन के ॥ सकल कामना पूरन ति
न के ॥ आठउ संख अंक अति सुंदर ॥ अरुन जलज पर मन हुं हंस बर ॥ संख अंक प्रभु पद जो ध्या कल ५
वै ॥ तिन के निकट द्वष नहिं आवै ॥ नव संख प्रभु पद गदा प्रमत्ता ॥ जो के अंस सकल जग सत्ता ॥ पा को ध्या
न करत नित जोई ॥ तिन कर विघ्न कबहुं नहिं होई ॥ उपमा ना सकतौ छवि देनी ॥ मनहुं गुलाल भरी
सिय बेनी ॥ दस संपीत बिंदु पद सोहत ॥ प्रेम धाम निल बिसि पमन मोहत ॥ उपमा ना सु निरखि उर आ
नहुं ॥ अब निरखि अनडिग सुरगुर मानहुं ॥ पाके ध्यान मगन मन होई ॥ प्रभु पद प्रेम लहै जन सोई ॥
एकादस षट कोन चिन्ह पद ॥ भिंन भिंन सब बरन न बेद बद ॥ अग्र नील अरु सेत स्याम छवि ॥ और
न पीत षट बरन कहन कबि ॥ एक षट बरन सहित षट कोना ॥ प्रभु पद महं सोहत अति लोना ॥ मनहुं के
उ अस्त्रा हजारानि सत ॥ दैत्य पक्ष सुर पक्ष भौ मंजुल ॥ ए सब यस मिलि भए यक ठाहीं ॥ उदय कीन्ह र ॥२॥

Courtesy: Prof. Arnab Bhattacharya IIT Kanpur

CC-0. In Public Domain. Digitized By Sarayu Foundation Trust and eGangotri

विमंडलमाती॥ प्रभुषट्गुनप्रतिअंकवषाना॥ जासोंनाममयप्रभगवाना॥ अतिप्रसिद्धसवजग
महंताता॥ चिंतकजनकहंनवनिधिदाता॥ छहदसप्ररनचंदवितानै॥ प्रभुपदमहंसोभाआनिभ्राजै॥
सेतवरनअसवेदप्रसंसा॥ चंद्रदीराजाकेअंसा॥ प्ररनसमितजुतपदजोध्यावै॥ तीनितुंतापनतिनभूति
सनावै॥ लषितेरहसैंजमदंडकौअंका॥ रूपत्रिभंगीअतिसोवंका॥ गाउअसतेभवजमदंडा॥ सोपा
राजै५ परविमुक्तनप्रचंडा॥ स्यामवरनप्रभुचरनेविं॥ जेलिवरनतसारलताजै॥ उपमातातासकहैंजिनजोता दक्षतिप
अरुनकमलपरजनुफनिसोता॥ पाकेध्यानमगनमुनतोई॥ जमभयसपनेहुंलहैनसोई॥ अ
कवजुरदसत्रिवलीराजै॥ जाउअंसनीतिहुंनछाजै॥ तेनअरुनअरुस्यामसहावै॥ तिरछी
तीनिअधिकछविछावै॥ उपमातासकहैंपातिदेनी॥ अरुनसिवतैंधसीत्रिवेनी॥ पातिछविभि
हंमनजाकरलचै॥ त्रैगुनमयमायातेवांचै॥ पंचदसमछितिअंकलदेसा॥ अवनीभईजासलव
लेसा॥ जाकरयनवरनतमुनिराई॥ भवमगनतनसुधिविसराई॥ ननपलकितनमवगपदवानी॥
कहेउसिवअधिकारीजानी॥ चतुःकोनआकातिरानतिवर॥ मध्यपीतछनिस्यामसेनतर॥

Courtesy: Prof. Arnab Bhattacharya IIT Kanpur

CC-0. In Public Domain. Digitized By Sarayu Foundation Trust and eGangotri

अविरल भक्ति मोद सो पावै ॥ पावन बीना अंक विराजै ॥ जाके अंस सुभै सब बाजै ॥ अति विचित्र सु
सरि रिषि मन मोहा ॥ रंग मलै परन तुति षि सोहा ॥ विनय प्रेम वस कीन्ह रघुराया ॥ प्रभु पद अंक तें बीना पा
या ॥ करत फिरत गुन गान विसारद ॥ जीवन मुक्त भए मुनि नारद ॥ बीना अंक ध्यान रत मेरै ॥ कीर्तन
भक्ति तिन तिं प्रभु दे ॥ षोडस चिन्ह कहे मै गाई ॥ सुमिरन जिनहिं सकल भर बुराई ॥ इनकी महिमा आगम
अपारा ॥ श्रुति सारद नहिं वरनै पारा ॥ इति श्रीराम बाम चरण चिन्ह ॥ अब मन दछिन अंक सुहाए
लेश महेश विविधि विधि गाए ॥ मे कहुं कहुं सुमति अनुरूपा ॥ चरन चिन्ह गन अमित अनूपा
प्रथम हिं स्वस्तिक वेद वषाना ॥ जाके अंस सकल कल्याना ॥ सो छवि लषि तिय मन अनुरागो
॥ अरुन कमल विच मनहुं परागो ॥ स्वस्तिक अंक निरत मन जिनके ॥ सदानंद परिपूरन तिनके ॥
हल अष्ट कोन पद सोहा ॥ सो विलोकि धनपति मन मोहा ॥ ताकर ध्यान निरंतर कीन्हा ॥ धनप
ति पद दीने तिहि प्रभु दीन्हा ॥ आठो वरन सहित अति लोने ॥ अष्ट सिद्धि के आठो कोने ॥ ताको ॥२॥

Courtesy: Prof. Arnab Bhattacharya IIT Kanpur

CC-0. In Public Domain. Digitized By Sarayu Foundation Trust and eGangotri

ध्याननिरंतरजाके॥सिद्धीसकलबसैंयहलाके॥तीसरछत्रनोवेद्यसंसा॥छत्रादिकसवनार
केऐसा॥याकेध्यानवरनमनदलज॥पश्चिमदिसिकरअभिपतिभल्ल॥सेनछत्रप्रभुपदम
हंध्यावन॥मनबांछितफलचिंतकपावत॥चौकल्पवृक्षपदसोभित॥जोसुरूपलखिसुरप
तिमोहित॥हस्तिवरनप्रभुपदमहंभूषा॥जाकेऐसमकलसुररूषा॥सुरपादपप्रभुपदध्या
वै॥पूरनकामसुपुरुषकहावै॥सकलनेजकरकारननोई॥चक्रचिह्नप्रभुपदमहंसोई॥चरन
वरनसवनगप्रतिपाले॥जोकरसंतन्हदोंहिबाले॥चक्रचिह्नपदपंचमगाथा॥सुन
हुंसुतीछनतासुप्रभाथा॥सवपदऐकेवसैउरजिनके॥चारिपदारथकरतलतिनके॥छ
ठएंनवमालाछंदसोई॥असनसकलनजासोंहोई॥जवमालाप्रभुपदमहंजोहन॥अंतनछर
 नातिनकेसोहन॥ऊर्ध्वरेखलखिप्रभुपदमाहीं॥विभोसकलजाकरजगमाहीं॥सप्तमद
ष्टिशातिक्ष्न॥जानाहिंजेप्रभुध्यानविचक्षन॥प्रभुपदमेंहंजेरेखाध्यावन॥बलपोरुषध

Courtesy: Prof. Arnab Bhattacharya IIT Kanpur

॥५॥ नविद्यापावन॥ अरुनधुजापदवेदप्रसंसा॥ पटविसेषसवजाभेअंसा॥ जेअटीठेंउरमरेंनिजधारा॥ ति
नकहंभवनाहिंकछुसंसारा॥ नवरंवआचित्तपदसोई॥ मनिविसेषसवजातेंहोई॥ कीत्तनगुरुकचर
कअकारा॥ [redacted]॥ स्वरांवरान्निआतितीसन
धारा॥ नातअंकपदभावैजाही॥ नाकेपापमलारविलाही॥ दसमचित्तपदअंकुसजोई॥ अरुधा
तुकरकारनसोई॥ स्यामवरनछविश्रुतिअसभाषे॥ मनमतंगकुहंवसकरिराषे॥ याकोध्यानक
रतनरजोई॥ पावनठनिपदवीकहैंसोई॥ स्कादसलक्षनपदराजे॥ पदमअष्टदलअतिछबिर
छाजै॥ अरुनवरनसववेदप्रसंसा॥ सकेलपुरुषप्रगटेजेहिअंसा॥ परमअंसयतसिष्रठर
जाना॥ प्रलयअंतजोविधिअस्थाना॥ जाकोमनयाकेरसससै॥ प्रभुसरूपताकेमनभासै
स२ द्वादससायकअत्रविचित्रा॥ जाकेअंससकलजगअत्रा॥ स्वरांपंचसोरनपदलछन॥ सोइधा ॥५॥
नकरत्यामविचछन॥ याकेध्याननमगनमनजिनके॥ वचनप्रसिद्धसदाउरनिनके॥ वेरहोंषु

CC-0. In Public Domain. Digitized By Sarayu Foundation Trust and eGangotri
Courtesy: Prof. Arnab Bhattacharya IIT Kanpur

CC-0. In Public Domain. Digitized By Sarayu Foundation Trust and eGangotri

वत१

निश्चय कै आसवाना॥ जासु अंतर नैं वाहननाना॥ अतिविचित्र रथ अंकजो ध्यां॥ अव्याहत गगनि चिं
तकपावृत॥ अंक चतुरदस उकुटस्तु मंडन॥ जाके अंसस कल जगमंडन॥ हेमवरन अविछिपं बसो ताबा
लहत सुचित लवलप्रभावा॥ पंचदसौं सिंहासनचरना॥ रतनजटित चामीकरवरना॥ जाके अंस
सकलजगन्नासन॥ याको ध्यानप्रकलषलनासन॥ दक्षिन पद जो अंकु अकासा॥ षोडस अम
राविहृपरगासा॥ जासौं नाम प्रगट पठसोई॥ याके ध्याननतें सम मति होई॥ पद अंगुष्ट मलजवलसि
२४८ न॥ सप्तदसौं सोर अंक सतीसन॥ जवलसल्ल न पद ध्यावत जोई॥ विषपविवसमकवतें नहिं तोई
अष्टदसौं पदनिरवीरेषा॥ पुरुष सो अंकुस वेषा॥ पुरुषारथ वहं लगि जगमाहीं॥ सवकूरको ऽनम
न३ भपद माहीं॥ पुरुषवेष मैं दृष्टकरितई॥ अतिसय पुरुषारथ कौं लतई॥ षोडस अकजे मध्य पद वां
स२ सं॥ ते सियजन्त के दाहिन पा॥ दक्षिन अंक अष्टदेषभपद॥ ते सियजन्त के वाम वेद वद॥ सो लखा॥ स
लससे सन हिं कहिं सकाहिं॥ वरन्यो मति अनुसार यकपकौं गगन अमित॥ त बिनव प्रीति पुर कै२

CC-0. In Public Domain. Digitized By Sarayu Foundation Trust and eGangotri

कति ४

नउ

॥५॥ नीत कहे हैं नात निज गुपुत मत ॥ राम भगत न सुभीत कहत वतादि अनिधीति लषि ॥ चौपाई ॥ रघुब
र चरन कमल रति नाही ॥ चरन चिह्न गन कहब न ताही ॥ सुनत मुनिस्स न प्रभु पद अंका ॥ मगनभ
ए उन्नि मिल हि निधि रंका ॥ बोले बचन नाइ पद सीसा ॥ धन्य धन्य प्रभु धन्य मुनीसा ॥ अति आरत
मै प्रभु पन्न नाथा ॥ नाथ कृपा अब भए सनाथा ॥ अस कीन दंडबन जाई ॥ परम सुप्रेम मीमिन रहो
बर्द ५ ई ॥ नव मुनि बैठा हुलासा चरन चिह्न लषि मन में भावा ॥ दोहा ॥ तीन अतीस मुनी समत बरन न चहुन्र मर्द ४
५६३ तिजानि ॥ बसत हृदय सिय राम के चिह्न सकल गुन खानि ॥ चौपाई ॥ बाइस अरु सीस मग न आनि निभर हु ॥ बा
रबार मुनि उच्चरन न परेऊ ॥ दोहा ॥ मंकि रसा मन ग्रंथ ते अरु संचित मत जानि ॥ बरने भाषा कछु के चर
रन चिह्न गन खानि ॥ इति श्री अगस्त्य संहितो क्त संक्षेप श्री सीताराम चरन चिह्न रतीन संपूर्ण ॥

वे. ३१ ४५ गं. सं. ५५ २७३

॥५॥

५२०६

Courtesy: Prof. Arnab Bhattacharya IIT Kanpur